... अधिक थे। ... पालतू पशु

प्रारम्भिक आर्यों का धार्मिक जीवन :—

1 आर्यों का समाज पितृसत्तात्मक होने के कारण उनके देवताओं में स्वभावतः पुरुष देवताओं की प्रधानता थी ये यज्ञों के द्वारा अपने देवताओं को प्रसन्न करते थे ऋग्वेद मे कई घरेलू तथा सार्वजनिक यज्ञों का वर्णन है। उनके एक छन्द मे कहा गया है कि प्रथम देवाहुती के फलस्वरूप सृष्टी का विकास हुआ। प्रजापती (बाद मे ब्रह्मा के रूप मे विख्यात) को आदि पुरुष माना जाता है। कहा जाता है कि देवताओं ने, जो उनके ही पुत्र थे, उनका यजन किया दिव्य पुरुष के यज्ञाहुती के फलस्वरूप उनके शरीर से सृष्टी का उदय हुआ इससे सिद्ध होता है कि विश्व व्यवस्था के निर्वाह के लिए यज्ञ कितना आवश्यक एव महत्वपूर्ण था। लेकिन यज्ञोपासना का वास्तविक विकास भारत मे आर्यों के फैलाव के दूसरे दौर मे हुआ।

नोट ऋग्वेद के एक अवतरण मे कहा गया है कि सृष्टि का उद्भव प्रथम ब्रह्माण्डीय यज्ञ से हुआ देवताओं ने स्वयं प्रजापति की बली चढ़ा दी और उसी दिव्य बली से ब्रह्माण्ड का उत्पन्न सृजन हुआ।

2. ऋग्वैदिक आर्यों के आर्थिक एव सामाजीक जीवन के बारे मे कहा गया है कि पशु चरण उनका प्रमुख धन्धा था और पितृ प्रधान समाज था इसी संदर्भ मे एक पहलु और इंगीत हुआ है कि ऋग्वैदिक देव कुल मे देवीयो का नगण्य स्थान था चुंकी पशुचारण के लिए लोगो को जगह जगह जाना पड़ता था अतः उनके यह अभियान प्राकृतिक शक्तियों से अत्यधिक प्रभावित थे अतः प्राकृतिक शक्तियों से डरकर प्राकृतिक शक्तियों को अपने मन मे दैहिक रूप देकर उन्हे प्राणियों के रूप मे देखा और उनमे मानव और पशु के गुण आरोपित करके उनको पूजा करना प्रारम्भ कर दी ऋग्वैदिक देव कुल मे अनेक देवताओं को स्थान मिला है और ये (कुछ) देवता प्राकृतिक शक्तियों के प्रतिक भी है जैसे सूर्य, अग्नि, धौस, मारुत, वायु और यहां तक की इन्द्र, वरुण, मित्र, विष्णु, रुद्र इत्यादि भी प्राकृतिक शक्तियों से सम्बन्धित है।

नोट - ऋग्वैदिक आर्य लोग प्राकृतिक पुजक थे

3. ऋग्वैदिक काल मे आर्यों के सबसे प्रमुख देवता इन्द्र थे ऋग्वेद मे इन्द्र का वर्णन 250 बार आया है इन्द्र ने ऋग्वैदिक आर्यों के युद्धो का नेतृत्व किया था ऋग्वेद मे इन्द्र को पुरन्दर कहा गया है पुरन्दर का अर्थ होता है किलो का ध्वस्त करनेवाला इन्द्र सर्वाधिक लोकप्रिय देवता थे उनके और ग्रीक (युनानी) देवता "ज़ीअस" मे कुछ समानताए दिखाई पड़ती है। इन्द्र नागो और असुरों पर प्रहार करने के लिए हमेशा तैयार रहता था। उसने कई नगरो को ध्वस्त किया था। उसे सोमरस पिने और पिलाने का बहुत शौक था। सोमरस आर्यो एव वैदिक काल के देवताओं का अत्यंत मादक पेय था जो सोम वनस्पती से मिलता था और हिमालय के मुजवत चोटी पर मिलता था अभी तक विद्वान इस वनस्पती की खोज नही कर पाये है इन्द्र बादलों के देवता था वे बादलों को रोककर वर्षा करते थे।

नोट (i) इन्द्र के पिता का नाम द्यौस थे जो वैदिक देवताओं मे दो प्राचीनतम देवताओं मे से एक है दुसरा का नाम प्रथिवी

(ii) इन्द्र को रथेष्ट, जितेन्द्र (इन्द्रियों को जितनेवाला), सोमपाया (सोमरस पिनेवाला) वज्रपाणी (वज्र धारण करने वाला) ब्रतहन्ता (ब्रत नामक राक्षस को मारने वाला)

(iii) इन्द्र की पत्नी का नाम इन्द्राणि है। उनके वाहन हाथी का नाम ऐरावत है। उनके सेवक गन्धर्व (स्वर्ग के गायक वादक) उनकी स्त्रीयॉं (अप्सराएं थी) जो सुन्दर, कामुक, और मोहक होती थी उनके से एक थी उर्वशी

(iv) उर्वशी ने अपने पार्थिक प्रेमी पुरुरवा के सामने स्वीकार की थी कि — स्त्रीयों के मित्रता नही मील सकती

(v) राक्षसो के विरूध्द संघर्ष मे आर्य कबिलों को विजय दिलाने वाले इन्द्र को उपद्रवी स्वभाव का और नैतिकता से परे दिखलाया गया है

(vi) इन्द्र को मौसम का भी देवता माना गया है और उसे आंधि तुफान से भी सम्बन्धित किया गया है।

4. ऋग्वैदिक आर्यों के दुसरे महत्वपूर्ण देवता अग्नि थे जिनके सम्मान मे ऋग्वेद मे 200 बार या 200 सुक्त संकलीत है। आदिम अवस्था के लोगो मे अग्नि की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण थी क्योकि इससे वे जंगल को जलाते थे, खाना पकाते थे और देवताओं का आहवान किया करते थे अग्नि की

उपासना न केवल भारत मे बल्कि ईरान मे भी प्रचलित रही है। वैदिक काल मे अग्नि ने देवताओ और मानवो के बीच मध्यस्थता का काम किया समझा जाता था कि अग्नि मे डाली जाने वाली आहुतीयाँ आकाश मे जाती है और अंततः देवताओं को मिल जाती है।

5. वरुण → ऋग्वैदिक काल के तीसरे महत्वपूर्ण देवता वरुण थे वरुण जल राशी के द्योतक थे उन्हे ही प्राकृतिक संतुलन का देवता भी कहा जाता था यह समझा जाता था कि प्रकृती मे जो कुछ भी घटना घटती है वह उनकी इच्छा के अनुसार ही होता है।

नोट → प्रारम्भिक देव गण मे वरुण अधिक प्रतिष्ठित देवता है उनकी उपाधि असुर (अवेस्ता मे अहुर) है और वह ऋत अर्थात प्राकृतिक और नैतिक नियम का महान समर्थक है यह भावना ई०पू० 1400 पुरानी है जिसकी जानकारी हमे मितन्नी अभिलेख से मिलती है।

6. सोम → ऋग्वैदिक काल के चौथे महत्वपूर्ण देवता सोम सोम वनस्पती के देवता थे उनकी स्तुती ऋग्वेद के नौवे मंडल के समस्त 114 सूक्त मे की गयी है। ऋग्वेद मे सोम रस नामक एक मादक पदार्थ का वर्णन मिलता है

7. मारुत → ऋग्वैदिक काल के अगले महत्वपूर्ण देवता है मारुत है मारुत आँधी का प्रतिनिधित्व करते थे।

8. विष्णु → विष्णु एक गौण देवता थे वह भी अपना तेज बिखेरते रहते थे कहा जाता है कि विष्णु ने तीन पगों मे ब्रह्मांड को नाप लिया था।

9. रूद्र → रूद्र एक सदाचार दुराचार निरपेक्ष देवता थे। जिनकी बाण वर्षा से व्याधियों का प्रसार होता था उनकी उपासना हडप्पा वासियों की देन समझी जाती है।

10. चुकी समाज पितृसत्तात्मक था अतः देवियों को महत्वपूर्ण स्थान नही मिल पाया था फिर भी कुछ देवियों का उल्लेख ऋग्वेद मे हम पाते है जैसे "उषस" जो प्रातः काल का प्रतिनिधित्व करती थी, अदिती (सावित्री) इत्यादि

नोट → (i) सावित्री सूर्य का प्रतिरूप थी और ऋग्वेद का गायत्री मंत्र सावित्री को समर्पित है

(ii) प्रारम्भिक वैदिक धर्म को एकैकदेववाद (Henotheism or kathenotheism) कहा गया है। जिसके अनुसार लोग अलग-अलग देवताओं मे विश्वास करते जिनमे से प्रत्येक देवता अपनी अपनी जगह पर सर्वोच्च होता था।

(iii) ऋग्वेद मे कुल मिलाकर 33 देवताओं का उल्लेख है